

— नि caus. 1) *hineintreiben, vorwärtsbringen* (zu einem Ziel): उतादः पुरुषे गवि सूर्यश्चक्रं किरणयम् । न्यैरयद्भ्योतमः RV. 6, 36, 3. ये ते कामं न्यैरिरे die ihr Begehren an dich gebracht haben 8, 19, 18. — 2) *ausenden, aufstellen* (zu einem Geschäft), in der öfters gebrauchten Redensart: त्वां क्षमे सदमित्समन्य वै देवास्तौ देवमरुतिं न्यैरिरे RV. 4, 1, 1. यं देवा हूतमरुतिं न्यैरिरे 8, 19, 21. अरुतिं न्यैरिरे क्वयवाक् न्यैरिरे (Padap.: नि । इरिरे) 1, 128, 8. 2, 2, 3.

— प्र sich in Bewegung setzen, hervorkommen; zum Vorschein kommen, erstehen; ausgehen (vom Schall u. s. w.): यस्य ते विश्वा भुवनानि केतुना प्र चरेत् नि च विशते अक्षुभिः RV. 10, 37, 9. AV. 4, 23, 3. प्र चिप्राणां मृतयो वाच ईरते RV. 9, 83, 7. प्र मनीषा ईरते सोममच्छं 93, 3. प्र ब्रह्म्या व ईरते मर्कसि 7, 56, 14. प्र धन्वा न्यैरते 8, 20, 4. यत्प्रेरते नामधेयं दधानाः 10, 71, 1. TS. 2, 2, 2, 3. पशवो वै पूषा त एतस्य प्रसवे प्रेरते ÇAT. Br. 9, 2, 2, 12.

— caus. act. *vorwärtsdrängen; entsenden; hervortreiben, hervorgehen lassen; hervorbringen* (einen Schall); *antreiben, befördern* (nach einem Ziel): नावं प्र यत्समुद्रमीरयाव मध्यम् RV. 7, 88, 3. 10, 116, 9. प्राणां चैर्यपतं नदीनाम् 6, 72, 3. अयः प्रेरय सगरस्य बुधात् 10, 89, 4. AV. 10, 2, 26. स प्रेरयति मारुतम् ÇIKSHĀ 6. अथः प्रेरित Suçr. 1, 236, 18. तमुपाद्रवडुग्यम्य दक्षिणं दानिर्नाशचरः । एकाताल इवात्पातपवनप्रेरितो गिरिः ॥ Ragh. 13, 23. प्रेरयती ततश्चातुः सुग्रीवं सा दर्श च R. 4, 19, 33. अन्यतो नयने प्रेरयती Çāk. 33, v. l. ततस्ततः प्रेरितवामलोचना 23, v. l. प्राग्रये वाचमीरय RV. 10, 187, 1. प्र पर्जन्यमीरया वृष्टिमत्सम् 98, 8. तात्प्रेरय स्वे अग्ने सधस्थे VS. 8, 19. प्रेरय स्रोतं अर्थं न पारम् RV. 10, 29, 5. सुवृत्तिं प्रेरय शिवर्तमाय पञ्चः 8, 83, 10. आत्मानमपि च कुहः प्रेरयेद्यमसादनम् MBh. 3, 1070. प्रेरयाश्चान् Çāk. 7, 20, v. l. लक्ष्मणं प्रेरयेदृक् R. 3, 30, 23. किमुदिश्य काश्यपेन मत्सकाशमृषयः प्रेरिताः स्युः Çāk. 62, 16. कुर्वतं प्रेरयति = कारयति P. 3, 1, 26, Sch. 1, 4, 52, Sch. यात्रापि प्रेरयामास (Str.: चोदयामास) तं शक्तेः प्रथमं शरत् Ragh. (ed. Calc.) 4, 24. MBh. 3, 72. R. 3, 8, 16. प्रेरयमाणः स तदुणैः कान्हास 10, 212. प्रेरितो ऽभूत्स्वबन्धुभिः । कटाक्षदीपगमने मुकुत्सेना बाणायया 13, 74, 76. Vid. 150. प्रेरिताश्चन्द्रपदैः — चन्द्रकाताः erregt Megh. 71.

— अभिप्र caus. pass. *vorwärts getrieben werden* Suçr. 1, 320, 20.

— संप्र sich zusammen erheben: संप्रैरते अनु वातस्य विष्ठाः RV. 10, 168, 2. निशितायां हि रक्षांसि प्रेरते संप्रेणीन्येवेतानि कृत्ति TS. 2, 2, 2, 3.

— caus. *vorwärts drängen, stossen*: कूपोपकण्ठे विश्रातो ब्राह्मणस्तथा — संप्रेर्य कूपान्तः पातितः Pañkat. 222, 2.

— प्रति caus. *aufsetzen*: शिरः प्रत्यैरयतम् RV. 1, 117, 22.

— वि caus. act. *auseinandertreiben; eröffnen, zerbrechen; zertheilen*: पुरंदरो दासीरैर्यदि (पुरः) RV. 2, 20, 7. 1, 51, 11. त्रेधा सकृन् वि तदैरयेयाम् 6, 69, 8. इन्द्रो वि वृत्रमैरयत् 8, 63, 3. वि गोभिरिन्द्रमैरयत् 1, 7, 3. aor.: अहं पुरो मन्दसानो व्यैरम् 4, 26, 3. 2, 19, 6. वि पर्वतस्य दैर्द्वान्यैरत् 13, 8.

— सम् partic. समीर्ण P. 7, 1, 102, Sch. (auf सृ zurückgeführt). — caus. act. med. 1) *in Bewegung setzen, auffagen; hervorbringen* (einen Laut u. s. w.): समीरयन्भुवना मातरिश्वा Taitt. Br. 3, 1, 1, 13. समीरयो चकाराथ रात्तसस्य कपिः शिलाम् BHATT. 14, 111. तरुगणान्माहूतेन समीरितान् R. 5, 16, 45. MBh. 1, 5882. तेजः समीरितम् Suçr. 1, 31, 4. Nir. 4, 13. 3, 23. 6, 15. तामिरभरपौः शब्दस्त्रासिताभिः समीरितः MBh. 3, 12185. मया च यदिदं वाक्यम् — समीरितम् R. 4, 6, 21. 61, 28. 6, 103, 1. Sīv. 3, 36. Ragh. 3, 47. — 2) *zusammenbringen, zu Stande bringen; in's Leben rufen, entste-*

*hen lassen*: मक्ती समैरच्चम्वा समीची RV. 3, 55, 20. समैरयं रोदसी धारयं च 4, 42, 3. देवा गर्भं समैरयन् AV. 1, 11, 2. 4, 2, 8. सूर्यम् 3, 31, 7. कश्यपस्त्वामसृजत कश्यपस्त्वा समैरयत् 8, 5, 14. 2, 5. 15, 1, 1. 19, 54, 1. SV. I, 5, 2, 3, 2. Jmd mit Etwas ausstatten: प्राणेनमे चक्षुषा सं तन्निमं समीरय तन्वाइ सं बलेन AV. 5, 30, 14. ÇAT. Br. 3, 3, 1, 31. 8, 2, 6. 14, 1, 2, 31. *wiederbeleben*: यन्निवेष्टा तस्मिन्संग्रामे ऽघ्नस्तान्यितृयजेन समैरयत् 2, 3, 1, 1. 2. — 3) *verleihen*: समिन्द्रेरय गामनृद्राहं य आर्वहृदः RV. 10, 39, 10. वामं पितृभ्यो य इदं समैरिरे (AV. ईरिरे) मयः पतिभ्यो जनयः परिष्वेत 40, 10. आदित्सर्विभ्यश्चरयं समैरत् 3, 31, 15.

— अभिसम् caus. *in Bewegung setzen*: कदली वतिनाभिसमीरिता MBh. 10, 579.

ईरण (von ईर) 1) adj. *bewegend, treibend* Nir. 2, 14. 3, 19. — 2) m. Wind Suçr. 2, 146, 21. — Vgl. समीरण.

ईरामा f. N. pr. eines Flusses MBh. 3, 12909.

ईरिण n. mit Salz geschwängelter Boden, Wüste AK. 3, 4, 59. H. an. 3, 193. MBD. n. 36. ततस्तदीरिणं ज्ञातं समुद्रश्चावसर्पितः MBh. 13, 7257. वसिष्ठस्याश्रमपदं भूयमासीन्महात्मनः । मुहूर्तमिव निःशब्दमासीदीरिणसंनिभम् ॥ Viçv. 5, 24. — Vgl. इरिण.

ईरिन् m. N. pr. eines Mannes; pl. *seine Nachkommen* MBh. 2, 334.

ईर्य, ईर्यति = ईर्यं Dhātup. 13, 3.

ईर्य s. desid. von अर्थ.

1. ईर्म (Padap.: ईर्मा) adv. *auf der Stelle, hier, hierher* Nir. 3, 23. ईर्मा पुरंधिरजकादरातीः RV. 4, 27, 2. ईर्मा तस्युपीरहंभिड्डे डहे 5, 62, 2. ईर्मन्यद्वपुषे वपुश्चक्रं रथस्य येमयुः 73, 3. युवो रथस्य पारं चक्रमीयत ईर्मन्यद्वा-मिषायति 8, 22, 4. ईर्मव ते न्यविशत केपयः 10, 44, 6.

2. ईर्म 1) m. Arm, Vorderschenkel eines Thieres: ईर्माभ्यामयनं ज्ञातं स-क्विभ्यो च वशे तत्र AV. 10, 10, 21. अस्मौ चातो चैर्मा ÇAT. Br. 10, 6, 5, 3. Nir. 5, 25. — 2) n. Wunde Up. 1, 143. AK. 2, 6, 2, 5. H. 463 (nach dem Sch. auch m.). m. Hār. 136. — In der ersten Bed. von ईर (womit das Thier ausgreift); ईर्म Wunde ist mit अरुम् zusammenzustellen.

ईर्मात् adj. Bez. der Sonnenrosse, nach den Commentt. entweder: *breit an den Enden* (des Leibes) oder: *schmal an denselben*; richtiger wäre: *die Breiten an beiden Enden* (der Reihe) habend: ईर्मात्तासः सिलिकमध्यमासः संप्रारणासो दिव्यासो अत्योः । क्सा इव श्रेणिशो यंतते RV. 2, 163, 10. Nir. 4, 13. ईर्म in dieser Verbindung ist viell. auf ein Thema ईर्मन् zurückzuführen: *aufstrebend, ausgreifend* (von einem muthigen Rosse).

ईर्य (von ईर) adj. *der anzuregen ist*; davon nom. abstr. ईर्यता f. VS. 30, 8.

ईर्या (von ईर) f. das Herumwandern (eines religiösen Bettlers) H. 1500. कल्याणा पुनरियं प्रव्रजितस्येया Burn. Intr. 168, N. 2. ईर्यायश्च die Gelübde eines religiösen Bettlers: ईर्यायश्च ध्यानमौनादिकं भित्तुव्रतम् Sch. zu H. 1501. चर्या = ईर्यायश्च्यति AK. 2, 7, 33. H. 1501. कृत्वा = लेभा-न्मिथ्येयायश्चकल्पना AK. 2, 7, 52. Sehr häufig erscheint ईर्यायश्च bei den Buddhisten und bezeichnet hier vier Stellungen des Körpers: *den Gang, die aufrechte Stellung, das Sitzen und das Liegen* Burn. Intr. 168, N. 2.

ईर्यात् = ईर्यात् ÇABDAR. im ÇKDr.

ईर्या f. Neid, Eifersucht ÇABDAM. im ÇKDr. MBh. 3, 15456. त्यक्तेर्ष 13, 152. तथेष्टा ननु नमिता भार्याः — कथमीषा न कुरुषे सुयोवस्य समीपतः R. 4, 24, 37. AMAR. 83. zu Çāk. 81. — Nachlässige Schreibart für ईर्या.